आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2575 • उदयपुर, बुधवार 12 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अंकित के जीवन में अंकित हुई खुशियाँ

उत्तरप्रदेश के शहर गोरखपुर निवासी अंकित भारती (17) 12वीं कक्षा के विद्यार्थी हैं। बचपन में छत से गिर पड़े थे। पांव में मामूली सी खरोंच थी। हालांकि दर्द रहता था। मालिश कर दर्द को कम करने की कोशिश करते थे। साल–डेढ़ साल पूर्व साईकिल चलाते गिर पड़े तो उसी पेर में चोट लगी जिस पर बचपन में गिरने से खरोंच आई थी। घर पर ही इलाज करते रहे लेकिन दर्द बढ़ता गया। माता–पिता प्रेमलता– रामानंद प्रसाद ने शहर के ही एक अस्पताल में जांच करवाई। जहां आठ दिन भर्ती रखा गया।

डॉक्टरों के अनुसार बचपन में लगी खरोंच का तत्काल सटीक उपाय न होने से उस जगह कैंसर से हड्डी गल गई। जिसका पांव काटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। बाराबंकी के एक अस्पताल में फिर दिखाया तो वहां भी पांव काटने की सलाह ही दी गई। बांया पैर कटवाना ही पड़ा। अक्टूम्बर माह में नारायण सेवा संस्थान में आने पर अंकित को निःशुल्क कृत्रिम पांव लगाया गया। जिससे वे अब आराम से चल लेते हैं। माता–पिता और दो बड़े भाई अंकित के कृत्रिम पांव लगने और चलता हुआ देखकर खुश हैं।

बढ़ चले थमे पांव

मथुरा निवासी केशव शर्मा (20) ने आईटीआई उत्तीर्ण कर शहर में ही कम्प्यूटर सुधार का काम शुरू किया। माता संतोष गृहिणी हैं, जबकि पिता विनोद शर्मा एक मसाला फैक्ट्री में काम करते हैं। केशव करीब तीन वर्ष पहले मथुरा के स्टेट बैंक चौराहा से बाइक पर घर लौट रहे थे कि सामने से आते एक ट्रैक्टर से भिड़ंत हो गई। जिससे बाए पांव में फैक्चर हो गया। नजदीकी हॉस्पीटल में प्राथमिक उपचार के बाद दिल्ली में करीब 6–7 ऑपरेशन हुए किन्तु पांव ठीक नहीं हो सका। डॉक्टरों के अनुसार पांव की नसें काफी क्षतिग्रस्त हो गई थी।

उन्होंने पांव को काटने की सलाह दी लेकिन परिवार ने तब ऐसा करना उचित नहीं समझा। मथुरा आने के बाद केशव की हालत और बिगड़ गई और यही के एक अस्पताल में अनततोगत्वा डॉक्टरों की सलाह पर पांव को कटवाना ही पड़ा। पांव काटने से जिन्दगी मानों ठहर–सी गई। काम काज सब छूट गया। इलाज में परिवार की आर्थिक स्थिति भी खराब हो गई। परिचितों ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी किन्तु आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण यह सम्भव नहीं हुआ।

कुछ समय बाद नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने की टी.वी पर सूचना देखकर पिता के साथ नवम्बर 2021 के द्वितिय सप्ताह में उदयपुर आए जहां उनके कृत्रिम पांव लगाया गया। अब वे बिना सहारे खड़े भी होते हैं और चलते भी हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सहस्त्रार्थ चक्र, ऐसा हार्ट अनाहत चक्र का। ठाकुर जी ने अपने को निःशुल्क दिया है कोई फीस नहीं ली है। कोई दक्षिणा भी नहीं ली। ऐसा सहस्त्रार्थ चक्र का, मस्तिष्क संज्ञा अर्थात् पहचानने की शक्ति। विज्ञान अर्थात् संसार की बहुत बड़ी लाईब्रेरी। जिसमें करोड़ों बातें अब तक की देखी, सुनी, समझी, जानी, त्वचा ने स्पर्ष किया।

आरती देह देवालय की।
पावन पंचतत्वमय की।।
आरती देह.....।

ये देह देवालय बाबूजी। मैं क्यों आपके पास हाजिर होता हूँ? आज सुबह मैं संजीव स्वामी जी के पास बैठा था। उन्होंने कहा– कोई सत्संग की बात बताइये। मेरे मन में आया उस समय, आप भी लिख लो। बहुत अच्छा दोहा रामचरित मानस का है।

तात् स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिह तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग।।

ये हमारे भाइयों ने, एक तराजू, ये तराजू छोटा सा तराजू है। दस, बीस रुपये में, पचास रुपये में मिल गया। एक क्षण का सत्संग भी इस पलड़े में रख दें, और इस पलड़े में स्वर्ग, अपवर्ग ओ ऊपर जाने के बाद मोक्ष मिलेगा, मालूम नहीं भाईसाहब। आप और अक्षय कर लो जीते– जीते मोक्ष मिल जाये, और अक्षय कर लो। तो अणी में सब कुछ रख दो और एक क्षण रो सत्संग रख दो। सत्संग रो पलड़ो यु वेई जाई – भारी।

राशन पाकर हर्षाया बाबूराव

दिवाली के दो दिवस पूर्व नारायण सेवा संस्थान से राशन सामग्री सहायता पार बाबूराव और परिजन बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे– संस्थान के द्वारा दिए गए दीये जलायेंगे और राशन से मीठा बनाकर दीपावली मनायेंगे। वडगांव– गंगाखेड़ (परमणी) निवासी 40 वर्षीय बाबूराव दोनों पांवों से दिव्यांग है।

पत्नी इंदुमती दोनों आंखों से रोशनीहीन है। इने 10 वर्ष की एक बेटी है। भीख मांगकर गुजारा करने वाले इस परिवार पर कोरोना का ऐसा संकट आया कि दैनिकचर्या के साथ दो जून रोटी खाना भी दुभर हो गया। पति–पत्नी और बेटी रोटी–रोटी की मोहताज हो गई। दिव्यांग दम्पती भूख से इतने सताये गए कि पल–पल उन्हें मृत्यु करीब नजर आने लगी।

ऐसे परिवार की जानकारी जैसे ही संस्थान की परमणी शाखा को मिली तो उसने मदद करनी शुरू की। दो माह से निरन्तर राशन पाकर परिवार बहुत प्रसन्न हुआ। सहयोग करने वाले हाथों एवं दानवीरों का दिल से दुआ दे रहा है। दीपोत्सव के दिन शाखा संयोजिका मंजू जी दर्डा ने परिवार को मिठाई भेंटकर हर संभव मदद का भरोसा भी दिलाया। आपे प्रेषित भोजन सामग्री सहयोग ऐसे गरीब दिव्यांग और मजदूर परिवारों का निवाला बन रहा है जिनी आखिरी उम्मीद टूटने वाली थी आपका सहयोग हजारों गरीब परिवारों के लिए खुशियों की सौगात है।

संस्थान से सीखा : जीवन को बदला

मेरा नाम वीणा कोदली है नाईन्थ क्लास तक पढ़ी हूँ। एक छोटी बहन है जो कैन्सर जैसी भयानक बीमारी का ग्रास बन चुकी है। दीदी की शादी के लिये बचा के रखे थे पैसे पर छोटी बहन के इलाज में लग गये सारे पैसे तो बहुत परेशानी आ रही है। एक बड़ी बहन जिसकी शादी होनी बाकी है। और एक सबसे छोटी बहन जो कि अक्सर बीमार रहती है। लेकिन वीणा ने ईश्वर में आस्था रखते हुए नारायण सेवा संस्थान से 45 दिन का निःशुल्क सिलाई कोर्स किया।

वे बताती हैं– मैंने नारायण सेवा संस्थान से सिलाई सीखी है उसमें मैंने ब्लाऊज, पैटीकोट और सलवार सूट बनाना सीखा है।

इससे मार्केट में मेरा काम सब पसन्द करते हैं। बहुत अच्छा सिखाया। सुबह जाती हूँ। 11 बजे प्रतिदिन 200– 300 रुपये कमा लेती हूँ। मैं आज जो भी कमा रही हूँ नारायण सेवा संस्थान की तरफ से बहुत बड़ा योगदान है। आज वीणा अपनी मेहनत और आस्था से परिवार का गुजारा कर रही है।

सम्पादकीय

कहा जाता है कि 'संतोषी नर सदा सुखी, अंत लोभी महा दुःखी।' इसका सामान्य सा अर्थ है कि संतोषी वृत्ति का है वह सुखी रहता है व जो असंतोषी है वह दुःखी। किन्तु संतोषी कौन? असंतोषी कौन? जीवन में संतोष क्या? असंतोष क्या हैं? ठीक से विचार करें तो संतोष को सबसे बड़ा धन भी कहा जाता है। किसी कवि ने लिखा भी है –

गौधन, गजधन, बाजीधन,
और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन,
सब धन धूरि समान।।

यह संतोष ही है जो हमें किसी एक सीमा पर पहुँच कर सोचने को विवश करता है कि अब कितना दौड़ूंगा ? सच तो यह है कि इस दौड़ का कोई अंत नहीं है। दुनियां में और सब दौड़ों का अंतिम बिन्दु होता है पर असंतुष्ट व्यक्ति कहीं भी, किसी भी बिन्दु पर रुकना नहीं चाहता। उसे अनंत व अतृप्त क्षुधा व्याप जाती है। उसकी तृप्ति के लिये वह उचित–अनुचित का विचार भी नहीं कर पाता, तब समाज में विसंगतियों का दौर प्रारंभ होता है। असंतोष की ज्वाला बड़ी भयावह है, अतः संतोष धारण करके ही मानवता को, संबंधों को, स्वयं को बचाया जा सकता है।

कुछ काव्यमय

धीरज से उपजा संतोष
मानव को संस्कारी बनाता है।
संतोष फलित होकर हरेक को
सदाचारी बनाता है।
यह वह बीज है जो
मीठे फल देता है।
सारी व्यग्रताएं, सारी ऐषणायें
जड़मूल से हर लेता है।

– वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

अंधेरी गली के मोड़ का दीपक

मानव जीवन ईश्वर का श्रेष्ठ वरदान है। इसे सत्कर्म करते हुए जीना ही लक्ष्य होना चाहिए। यह जीवन मात्र भोग के लिए नहीं है। भोग तो जीवन–मृत्यु के चक्र में फंसाकर इस बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ ही कर देगा। इसलिए संसार के बंधन से मुक्त होने के लिए परमपिता परमात्मा की कृपा पाने का उपक्रम करना चाहिए। इसके लिए चिंतन, मनन और भजन आवश्यक है। जीना एक कला भी है और तपस्या भी। जीना वही सार्थक है जो अपने साथ दूसरों के जीवन में भी रस भर दे।

हम आनंद की खोज करें। जहाँ आनन्द मिलता है, उस स्थान का तलाशें और वीतरागता और उपशम का ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ सिर्फ आनंद का स्फुरण हो रहा हो। यही स्थिति ही हमें अध्यात्म के विकास की ओर प्रेरित कर सकती है। मोह और अज्ञान का जब विलय हो जाता है तो आनन्द की अनुभूति होती है।

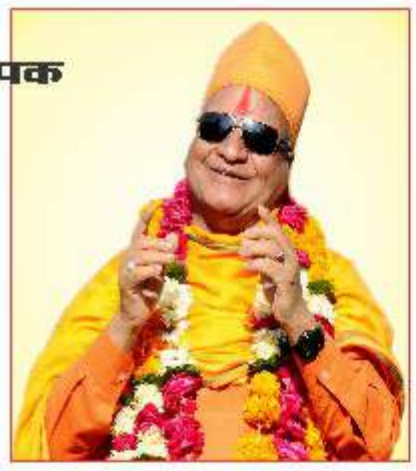

एक धनाढ्य व्यक्ति प्रतिदिन मंदिर जाता। देव–प्रतिमा के समक्ष घी का दीपक जलाता और प्रभु से अपनी सुख–समृद्धि के लिए विनती करता। वह वर्षों से मंदिर में दीया जलाता आ रहा था। उसी गाँव का एक गरीब भी संध्या ढले इस मंदिर में तेल का दीपक जलाया करता और प्राणीमात्र के कल्याण की प्रार्थना करता। बाद में वह उस दीपक को उठाकर अपने घर के सामने वाली अंधेरी गली के मोड़ पर रख आता। दीपक के सहारे उजाले में लोग बिना ठोकर खाएं गली को सहजता से पार कर लेते। दैवयोग से मंदिर में दीपक जलाने वाले सेठ और गरीब का एक ही दिन निधन हो गया। धर्मराज ने सेठ से ज्यादा निर्धन के पुण्य गिनाते हुए उसे स्वर्ग में अच्छा स्थान देने का पार्षदों को आदेश दिया। धनाढ्य यह सुनकर भौचक्का रह गया। वह बोला यह तो सरासर अन्याय और भेदभाव है। मैं प्रतिदिन घी का दीपक प्रभु को अर्पण करता था और यह कंगला तेल का दीया जलाता था यह भला मुझसे अधिक पुण्यात्मा कैसे हो सकता है ? धर्मराज मुस्कराएं।

बोले– तुम अपनी सुख–सुविधा और धन–धान्य की वृद्धि के लिए दीपक जलाते थे, जबकि यह गरीब सभी का हित साधने और आते–जाते लोगों को राह दिखाने के लिए अंधेरी गली में दीपक जलाकर रखता था। कर्मों का आकलन इस बात से किया जाता है कि वह कार्य किस प्रयोजन से किया जा रहा है। दूसरों की भलाई के लिए किए गए किसी भी कार्य का पुण्य स्वभावतः अधिक होता है। बंधुओं, मनुष्य जीवन का लक्ष्य है –प्रभु की कृपा का पात्र बनकर जनम–मरण के चक्र से मुक्ति पाना। इसके लिए वैराग्य का आश्रय लेना ही जरूरी नहीं है।

गृहस्थ रहते हुए भी भक्ति के बाधक तत्त्वों का परित्याग किया जा सकता है। निषिद्ध कर्म यथा–छल, प्रपंच, असत्य, हिंसा, चोरी एवं काम्य कर्मों को त्यागने के साथ ही मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा, धन–सम्पत्ति, वैभव, कुटुम्ब आदि अनित्य पदार्थों के प्रति तृष्णा का परित्याग भी जरूरी है। लौकिक पदार्थों के प्रति ममता और आसक्ति के स्थान पर प्रभु से अनन्य प्रीति और अनुराग के भाव मन में जागृत होने चाहिए और यह तभी सभी संभव है जब हमारा मन निर्मल हो। निर्मल मन से ही सत्कर्म प्रेरित होते हैं, जो प्रभु की शरण में ले जाने में सहायक होते हैं। मंदिर की ड्योढ़ी पर जले दीपक से अंधेरी गली के मोड़ पर जगमगाते दीपक का महत्त्व क्यों अधिक है, यह अब आप समझ ही गए होंगे ?ईश्वर ने हमें जिस स्वरूप में बनाया, उसी में संतुष्ट रहकर अपने कर्मों पर ध्यान दें। अच्छे कर्म का फल सदैव मीठा ही होता है। श्रीमद् भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण के अर्जुन को दिए उस संदेश को भी याद रखे कि कर्म करो फल की अभिलाषा मत करो। इसे भगवान पर छोड़ दो अर्थात् वही तुम्हारे कर्मों का आकलन कर फल भी निर्धारित करेगा।

–कैलाश 'मानव'

दूसरों का दुःख देख अपना दुख भूलें

जरा–सा मुसकान से आपकी निर्जीव फोटो अच्छी आ सकती है, तो हमेशा मुसकुराने से जिंदगी अच्छी क्यूँ नहीं हो सकती है। एक बच्चा अपने माता–पिता और परमात्मा को कोस रहा था कि मेरे पास इतना भी पैसा नहीं है कि इस कड़कड़ाती धूप में पहनने के लिए चप्पल खरीद सकूँ।

तभी पीछे से आई एक आवाज ने उसका ध्यान अपनी तरफ खींचा –अरे भाई, रो क्यों रहा हैं? और एक दूसरा लड़का उसके पास आकर उसके गले में हाथ डालकर कहने लगा – यार ! तू इतना क्यों रो रहा हैं?

उस बच्चे ने कहा कि मेरे माता–पिता के पास पैसे नहीं है। मुझे भगवान ने इतना गरीब बनाया है कि मैं चप्पल–जूते भी नहीं खरीद सकता, इसलिए मैं रो रहा हूँ। इस पर उस दूसरे लड़के ने कहा कि तू केवल इस बात के लिए रो रहा है कि तेरे पैरों में जूते–चप्पल नहीं हैं? देख भाई, जिस पाँव में जूते–चप्पल पहने जाते हैं, मेरे तो वे पाँव ही नहीं है। फिर भी मैं खुश हूँ और तू केवल जूतों के लिए रो रहा है।अपने से ज्यादा दुःखी किसी को देखते हैं तो हमें अपना दुःख कम लगता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

चलते चलते अन्ततः गंतव्य पर पहुँचे तो सबने राहत की सांस ली। सर्दी भीषण थी, चल चल कर थकावट भी हो गई थी। जहां इन्हें ठहराया गया वहां स्नानघर नहीं थे। आस पड़ोस के लोग अपने अपने घरों में पानी गर्म करके यात्रियों को बेचते थे। इन्हीं से गर्म पानी खरीद सबने स्नान किया। अब कैलाश मानसरोवर के दर्शन ही एकमात्र कार्य रह गया था। उस दिन सबने आराम किया, सोचा अगले दिन दर्शन हेतु निकलेंगे मगर अगले दिन भी किसी ने आगे चलने को नहीं कहा तो पता लगा कि दो दिन बाद जायेंगे।

कड़ाके की सर्दी में सबका एक एक पल गुजरना मुश्किल हो रहा था, ऐसे में दो दिन रूकने की बात किसी के समझ में नहीं आई। पूछा तो बताया कि यात्रियों का शरीर अभी यहां पड़ रही ठंड के अनुकूल नहीं हुआ है इसलिये नहीं ले जा रहे है, दो दिन में सबका शरीर इस तापमान का अभ्यस्त हो जायगा, उसके बाद ले जायेंगे। सबने दो दिन का समय जैसे तैसे कंपकंपाते हुए निकाला और फिर आगे बढ़े।

बचपन में मानसरोवर के हंसों और उनके मोती चुगने के किस्से बहुत सुने थे। ज्यूं ही मानसरोवर झील के पास पहुँचे एक साथ कई हंस नजर आ गये। शुद्ध धवल, पानी में तैरते हंसों के समूह के समूह देख कर मन प्रसन्नता से भर उठा। हंस तो उसने पहले भी देखे थे मगर ऐसे श्वेत–धवल हंसों को देखने का यह पहला अवसर था। झील का पानी बहुत ठंडा था। कोई बता रहा था पानी का तापक्रम–20 डि. है। इतने शीतल पानी में स्नान करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती मगर इतनी दूर से जिसके लिये आये थे वो तो करना ही था। कई दुस्साहसी लोग तो ऐसे बर्फानी पानी में भी झील पे नहा रहे थे मगर कैलाश ने तो झील के किनारे बैठकर लोटे से अपने शरीर का पानी डालकर स्नान करने की औपचारिकता पूरी की और सन्तुष्ट हो गया।

अंग - 206

सूर्य चलने लगा अकेला

नरेश साहू के घर 8 साल पहले दूसरे बेटे ने जन्म लिया। परिवार को खुशी के साथ साथ दुःख भी हुआ। नवजात बालक का दांया पैर बांए पैर की अपेक्षा लगभग 7 इंच छोटा होने के साथ ही घुटने में किसी प्रकार का जोड़ नहीं था। यह स्थिति आगे जाकर इसके लिए बड़ी मुश्किल बनने वाली थी। दुर्ग (छत्तीसगढ़) जिले की पथरिया तहसील के भेड़ेसरा गांव में रहने वाले गरीब किसान नरेश साहू ने अपने इस बेटे को 2–3 साल की उम्र होने पर रामपुर के एम्स सहित अन्य शहरों के अस्पतालों में दिखाया लेकिन कोई स्थाई उपाय नहीं मिला।

सूर्यकांत नामक इस बच्चे को पड़ोस के ही एक स्कूल में दाखिल करवाया गया। बच्चा पांव छोटे–बड़े होने के कारण चल नहीं पाता था। उसे गोद में अथवा साइकिल पर स्कूल छोड़ना पड़ता था। किसी ने कैलिपर तो किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी लेकिन गरीबी के चलते यह व्यवस्था नहीं हो सकी। तभी परिवार के किसी मित्र ने उन्हें उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान ले जाने की यह कहते हुए सलाह दी कि वहां निःशुल्क कृत्रिम पांव कैलिपर अथवा उपचार जो भी सम्भव होगा वह संतोषजनक ढंग से हो जाएगा।

पिता नरेश साहू बच्चे को लेकर संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उसके पांव की स्थिति को देखते हुए इसका विकल्प विशेष कैलिपर को ही मानते हुए बच्चे को कैलिपर विभाग के हेड डॉ. मानस रंजन साहू के पास भेजा। जिन्होंने सूर्यकांत के लिए अत्याधुनिक मॉड्यूलर एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस सहित विशेष डिजाइन का कैलिपर तैयार कर लगाया। जो बाएं पैर के बराबर ही था। बच्चे की उम्र बढने के साथ उसके वजन को झेलने और उसे चलने में यह एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस बड़ी मदद करेगा। कुछ दिन सहारे के साथ चलने के बाद नरेश अब खुद चलता है। पिता ने बताया कि वह अकेला ही स्कूल जाता और लौटता है। संस्थान ने उनके परिवार की चिंता को तो दूर किया ही बालक को भी आत्मविश्वास से भर दिया।